IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के कबीर: अनुवाद, रहस्यवाद और भारतीय संत-परंपरा का पुनर्पाठ

प्रतिभा झा

शोधार्थी, दिल्ली विश्विद्यालय

सारांश

टैगोर का ग्रंथ One Hundred Poems of Kabir केवल अनुवाद-कार्य नहीं, बल्कि भारतीय संत-परंपरा को पाश्चात्य जगत के समक्ष प्रस्तुत करने का एक सांस्कृतिक प्रयास है। इस आलेख में यह विवेचन किया गया है कि किस प्रकार टैगोर कबीर को एक सार्वभौमिक रहस्यवादी कवि के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं तथा उनकी व्याख्या भारतीय आध्यात्मिक परंपरा को पश्चिमी पाठकों के अनुकूल पुनर्संरचित करती है। साथ ही यह भी देखा गया है कि टैगोर की दृष्टि में कबीर हिंदू-मुस्लिम संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानवीय एकता और प्रेम के कवि के रूप में उभरते हैं।

बीज शब्द:

रवीन्द्रनाथ ठाकुर, कबीर, रहस्यवाद, अनुवाद-अध्ययन, भारतीय संत-परंपरा

भूमिका

भारतीय संत-परंपरा में कबीर का स्थान एक ऐसे कवि-संत के रूप में स्थापित है जिन्होंने धार्मिक रूढ़ियों, संप्रदायगत भेदों और कर्मकांडीय जटिलताओं का विरोध करते हुए प्रेम, सत्य और आंतरिक साधना पर बल दिया। दूसरी ओर, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आधुनिक भारत के ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा को वैश्विक संदर्भ में प्रस्तुत करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। टैगोर द्वारा कबीर के पदों का अंग्रेज़ी अनुवाद केवल साहित्यिक उपक्रम नहीं, बल्कि औपनिवेशिक काल में भारतीय अध्यात्म की अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुति का एक सांस्कृतिक प्रयास भी है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में जब पश्चिमी जगत में 'ओरिएंटलिज़्म' के प्रभाव में भारत की आध्यात्मिक छवि गढ़ी जा रही थी, उस समय टैगोर जैसे रचनाकारों की भूमिका अत्यंत निर्णायक थी। गीतांजलि की विश्वव्यापी प्रसिद्धि के बाद टैगोर ने कबीर को पश्चिमी पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। इससे एक ओर भारतीय संत-परंपरा को वैश्विक पहचान मिली, तो दूसरी ओर कबीर की छवि एक रहस्यवादी कवि के रूप में स्थापित हुई।

यह प्रश्न यहाँ विचारणीय है कि टैगोर का कबीर-पाठ मूल कबीर की कितनी प्रामाणिक प्रस्तुति करता है और कितनी सीमा तक वह पाश्चात्य पाठकों की अपेक्षाओं के अनुरूप पुनर्संरचित होता है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर और कबीर: वैचारिक निकटता

टैगोर की काव्य-दृष्टि में रहस्यवाद, प्रेम और व्यक्ति-परमात्मा के संबंध की अवधारणा केन्द्रीय है। कबीर के पदों में भी ईश्वर के साथ अंतरंग संबंध, प्रेम और साधना की गहन अनुभूति मिलती है। यही वैचारिक साम्य टैगोर को कबीर की ओर आकृष्ट करता है।

टैगोर के लिए कबीर केवल मध्यकालीन संत नहीं, बल्कि एक ऐसे कवि हैं जिनकी अनुभूति सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। टैगोर कबीर को हिंदू और मुसलमान दोनों परंपराओं से ऊपर उठकर "मानव-आध्यात्म" के प्रतिनिधि के रूप में देखते हैं। यह दृष्टि औपनिवेशिक भारत में सांप्रदायिक विभाजन की पृष्ठभूमि में विशेष महत्त्व रखती है।

टैगोर ने कबीर को आंतरिक साधना का कवि" मानते हुए उनके पदों में निहित प्रेम और विरह की अनुभूति को प्रमुखता दी। इससे कबीर की छवि एक ऐसे रहस्यवादी कवि के रूप में निर्मित होती है जो ईश्वर को प्रेमी, मित्र और आत्मा के साथी के रूप में अनुभव करता है।

टैगोर का अनुवाद: सांस्कृतिक संदर्भ और उद्देश्य

One Hundred Poems of Kabir का प्रकाशन केवल अनुवाद-परियोजना नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद की परियोजना थी। टैगोर का उद्देश्य पश्चिमी पाठकों को यह दिखाना था कि भारतीय अध्यात्म केवल वेदांत या उपनिषदों तक सीमित नहीं, बल्कि लोकभाषाओं में रचित संत-काव्य में भी उतनी ही गहन आध्यात्मिक अनुभूति विद्यमान है।

यह अनुवाद औपनिवेशिक सत्ता-संतुलन के संदर्भ में भी महत्त्वपूर्ण है। उस समय पश्चिमी जगत भारत को आध्यात्मिक रूप से "पिछड़ा" अथवा "रहस्यमय" मानता था। टैगोर ने कबीर के माध्यम से यह स्थापित करने का प्रयास किया कि भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में मानवीय अनुभव की गहराई और दार्शनिक परिपक्वता विद्यमान है।

हालाँकि, अनुवाद की प्रक्रिया में टैगोर ने कई स्थानों पर भावानुवाद को प्राथमिकता दी। इससे कबीर के पदों की मूल भाषिक बनावट और लोकधर्मी स्वर कुछ हद तक परिवर्तित हो जाते हैं।

रहस्यवाद की अवधारणा और कबीर का पुनर्पाठ

रहस्यवाद सामान्यतः ईश्वर के प्रत्यक्ष अनुभव की अनुभूति से जुड़ा है। टैगोर कबीर को भारतीय रहस्यवादी परंपरा का प्रतिनिधि मानते हैं और उनकी तुलना पश्चिमी रहस्यवादियों से करते हैं। यह तुलनात्मक दृष्टि एक ओर कबीर की सार्वभौमिकता को रेखांकित करती है, तो दूसरी ओर उनके सामाजिक-आलोचनात्मक स्वर को आंशिक रूप से पृष्ठभूमि में ढकेल देती है।

कबीर का रहस्यवाद सामाजिक संदर्भों से जुड़ा है—वह जाति, कर्मकांड और पाखंड के विरोध से उत्पन्न होता है। टैगोर के अनुवाद में यह सामाजिक प्रतिरोध अपेक्षाकृत कम मुखर दिखाई देता है और आध्यात्मिक प्रेम का पक्ष अधिक उभरकर सामने आता है।

क्षितिमोहन सेन, एवलिन अंडरहिल और टैगोर का सहयोग: कबीर-पाठ का निर्माण

रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा कबीर के पदों का अंग्रेज़ी अनुवाद एक एकांगी साहित्यिक प्रयास नहीं था, बल्कि इसके पीछे विद्वानों और अध्यात्म-चिंतकों का सहयोग भी सक्रिय था। इस संदर्भ में क्षितिमोहन सेन और एवलिन अंडरहिल की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

क्षितिमोहन सेन भारतीय संत-परंपरा के गंभीर अध्येता थे। उन्होंने कबीर सहित अनेक निर्गुण भक्ति-संतों के पदों का संकलन और व्याख्या की। टैगोर के साथ उनका संवाद केवल बौद्धिक स्तर पर सीमित नहीं था, बल्कि शांतिनिकेतन के वैचारिक परिवेश में दोनों के बीच निरंतर चर्चा होती रही। सेन के शोधकार्य ने टैगोर को कबीर की दार्शनिक पृष्ठभूमि और रहस्यवादी चेतना को समझने में सहायता प्रदान की। इससे टैगोर के अनुवादों को एक प्रकार की वैचारिक आधारभूमि प्राप्त हुई।

दूसरी ओर, एवलिन अंडरहिल पाश्चात्य रहस्यवाद की प्रसिद्ध अध्येता थीं। उन्होंने टैगोर द्वारा अनूदित One Hundred Poems of Kabir के अंग्रेज़ी संस्करण की भूमिका लिखी। अंडरहिल की भूमिका ने पश्चिमी पाठकों के लिए कबीर को ईसाई रहस्यवाद की परंपरा से जोड़कर प्रस्तुत किया। इससे कबीर की छवि एक ऐसे सार्वभौमिक रहस्यवादी के रूप में निर्मित हुई, जिसकी अनुभूति किसी एक धार्मिक परंपरा तक सीमित नहीं है।

यहाँ यह विचारणीय है कि अंडरहिल द्वारा की गई यह व्याख्या कबीर को पश्चिमी पाठकों के लिए अधिक ग्राह्य बनाती है, किंतु साथ ही उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों को एक प्रकार से अमूर्त कर देती है। इस सहयोगी प्रयास से कबीर का एक वैश्विक रहस्यवादी रूप सामने आता है, जो भारतीय संदर्भों से आंशिक रूप से मुक्त प्रतीत होता है।

पश्चिम में कबीर की स्वीकृति और टैगोर का सांस्कृतिक हस्तक्षेप

टैगोर के अनुवादों के पश्चात् कबीर पश्चिमी जगत में एक रहस्यवादी कवि के रूप में लोकप्रिय हुए। इससे पहले कबीर भारतीय संत-परंपरा के भीतर सीमित पाठकीय संसार में प्रतिष्ठित थे, किंतु टैगोर के माध्यम से वे अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक विमर्श का हिस्सा बने।

पश्चिम में कबीर की स्वीकृति का एक कारण यह भी था कि टैगोर ने उनके पदों को ऐसी भाषा और भाव-रचना में प्रस्तुत किया जो रोमांटिक और आध्यात्मिक संवेदना से युक्त थी। यह प्रस्तुति उस समय के पाश्चात्य पाठकों की “पूर्वी अध्यात्म” संबंधी अपेक्षाओं के अनुकूल थी। फलस्वरूप कबीर की छवि एक ऐसे कवि के रूप में उभरी जो भौतिक जगत से विरक्त होकर ईश्वर-प्रेम में लीन है।

हालाँकि, इस प्रक्रिया में कबीर का सामाजिक विद्रोही स्वर अपेक्षाकृत कम उभरता है। कबीर के पदों में जो जाति-विरोध, कर्मकांड-विरोध और पाखंड-आलोचना दिखाई देती है, वह टैगोर के अनुवादों में अपेक्षाकृत सौम्य रूप ग्रहण कर लेती है। इस प्रकार, पश्चिम में निर्मित कबीर-छवि एक चयनित और पुनर्संरचित छवि है।

यहाँ टैगोर का सांस्कृतिक हस्तक्षेप महत्त्वपूर्ण है। वे औपनिवेशिक संदर्भ में भारतीय अध्यात्म की गरिमा को पुनर्स्थापित करना चाहते थे। इस उद्देश्य से कबीर को प्रस्तुत करना उनके लिए रणनीतिक भी था—क्योंकि कबीर की निर्गुण भक्ति किसी एक धर्म-परंपरा में बंधी नहीं थी और इसलिए वे "सार्वभौमिक अध्यात्म" के प्रतिनिधि के रूप में आसानी से प्रस्तुत किए जा सकते थे।

अनुवाद की सीमाएँ: मूल कबीर बनाम टैगोर का कबीर

अनुवाद किसी भी रचना का पुनर्सृजन होता है। टैगोर द्वारा किया गया कबीर का अनुवाद भी एक रचनात्मक पुनर्सृजन है। इसमें भावानुवाद को प्रधानता दी गई है, जिससे कबीर की मूल भाषा (सधुक्कड़ी/लोकभाषा) की तीक्ष्णता और लोकधर्मी स्वर कुछ हद तक रूपांतरित हो जाते हैं।

मूल कबीर के पदों में लोकजीवन की सहजता, व्यंग्यात्मकता और तीखा प्रतिरोध दिखाई देता है। टैगोर के अनुवाद में यह स्वर अधिक सौम्य और काव्यात्मक हो जाता है। इससे कबीर की सामाजिक आलोचना की धार कुछ हद तक कुंद पड़ती है और आध्यात्मिक अनुभूति का पक्ष अधिक उभरकर सामने आता है।

इसके अतिरिक्त, टैगोर का अपना रहस्यवादी काव्य-बोध भी अनुवाद पर प्रभाव डालता है। गीतांजलि की काव्य-संवेदना और कबीर के पदों की व्याख्या के बीच एक अंतःसंबंध दिखाई देता है। इस कारण कभी-कभी यह प्रश्न उठता है कि टैगोर का कबीर वास्तव में कबीर है या टैगोर की दृष्टि से पुनर्निर्मित कबीर।

फिर भी, यह भी स्वीकार करना होगा कि टैगोर के अनुवादों ने कबीर को विश्व-पटल पर प्रतिष्ठित करने में निर्णायक भूमिका निभाई। यदि यह अनुवाद-प्रयास न होता, तो संभवतः कबीर पश्चिमी पाठकों के लिए उतने सुलभ और परिचित न बन पाते।

औपनिवेशिक संदर्भ में कबीर की पुनर्व्याख्या

औपनिवेशिक काल में भारतीय बौद्धिक वर्ग के सामने अपनी सांस्कृतिक पहचान को पुनर्परिभाषित करने की चुनौती थी। टैगोर जैसे रचनाकारों ने भारतीय अध्यात्म और साहित्य को वैश्विक संदर्भ में प्रस्तुत कर औपनिवेशिक सांस्कृतिक वर्चस्व का प्रत्युत्तर दिया। कबीर की पुनर्व्याख्या इसी प्रक्रिया का हिस्सा थी।

कबीर को एक सार्वभौमिक रहस्यवादी के रूप में प्रस्तुत करना औपनिवेशिक विमर्श में भारतीय परंपरा की गरिमा को स्थापित करने का एक माध्यम था। इससे भारतीय संत-परंपरा केवल स्थानीय या लोक परंपरा न रहकर विश्व-साहित्य का अंग बन सकी।

हालाँकि, इस पुनर्व्याख्या में कुछ वैचारिक सरलीकरण भी हुआ। कबीर के जटिल सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों को वैश्विक अध्यात्म के ढाँचे में ढाल दिया गया। यह सरलीकरण औपनिवेशिक संदर्भ में सांस्कृतिक रणनीति के रूप में समझा जा सकता है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

टैगोर द्वारा किए गए अनुवादों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने कबीर को पश्चिमी पाठकीय संसार में प्रतिष्ठित किया। One Hundred Poems of Kabir के माध्यम से कबीर विश्व-साहित्य के विमर्श का हिस्सा बने। यह कार्य केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक कूटनीति का भी एक रूप था।

किन्तु आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो टैगोर का अनुवाद-कार्य पूर्णतः तटस्थ नहीं है। उनकी अपनी काव्य-दृष्टि और रहस्यवादी चेतना अनुवादों पर प्रभाव डालती है। परिणामस्वरूप कबीर का स्वर कहीं-कहीं टैगोर की संवेदना से आच्छादित प्रतीत होता है। इससे यह प्रश्न उठता है कि अनुवाद के माध्यम से निर्मित कबीर की छवि किस सीमा तक "मूल कबीर" है और किस सीमा तक "टैगोर की व्याख्या में कबीर"।

यह आलोचना टैगोर के कार्य के महत्त्व को कम नहीं करती, बल्कि अनुवाद को एक रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में समझने की ओर संकेत करती है। अनुवाद केवल भाषा-परिवर्तन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्संरचना भी है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा कबीर के पदों का अंग्रेज़ी अनुवाद और उनकी रहस्यवादी व्याख्या भारतीय संत-परंपरा को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित करने का एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रयास है। टैगोर ने कबीर को एक ऐसे सार्वभौमिक कवि-संत के रूप में प्रस्तुत किया जो हिंदू और मुस्लिम परंपराओं की सीमाओं से परे मानवीय एकता, प्रेम और आंतरिक साधना का संदेश देता है।

टैगोर की दृष्टि में कबीर का महत्त्व केवल उनके सामाजिक प्रतिरोध में नहीं, बल्कि उनकी रहस्यात्मक अनुभूति में निहित है। इस कारण टैगोर का कबीर-पाठ आध्यात्मिक प्रेम और व्यक्ति-परमात्मा के संबंध को केन्द्रीय महत्त्व देता है। यह प्रस्तुति पश्चिमी पाठकों के लिए भारतीय अध्यात्म को समझने का एक सहज माध्यम बनती है।

हालाँकि, यह भी स्पष्ट है कि टैगोर द्वारा प्रस्तुत कबीर की छवि मूल कबीर का संपूर्ण प्रतिबिंब नहीं है। अनुवाद और पुनर्व्याख्या की प्रक्रिया में कबीर के सामाजिक विद्रोही स्वर और जाति-विरोधी चेतना अपेक्षाकृत पृष्ठभूमि में चली जाती है। इसके स्थान पर एक सौम्य, सार्वभौमिक और रहस्यवादी कबीर की छवि निर्मित होती है। यह चयनात्मक प्रस्तुति औपनिवेशिक संदर्भ में सांस्कृतिक रणनीति के रूप में समझी जा सकती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि टैगोर का कबीर एक ओर भारतीय संत-परंपरा की वैश्विक स्वीकृति का माध्यम बनता है, वहीं दूसरी ओर वह मूल कबीर के कुछ सामाजिक-ऐतिहासिक आयामों को सीमित कर देता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर के कबीर' भारतीय संत-परंपरा के वैश्वीकरण की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं। टैगोर का यह प्रयास औपनिवेशिक काल में भारतीय सांस्कृतिक आत्मगौरव की पुनर्स्थापना का साधन भी है। यद्यपि अनुवाद और व्याख्या की प्रक्रिया में मूल कबीर की कुछ सामाजिक धाराएँ मृदुल हो जाती हैं, फिर भी यह कार्य कबीर को विश्व-साहित्य के परिदृश्य में प्रतिष्ठित करने में निर्णायक सिद्ध होता है।

संदर्भ-सूची

- टैगोर, रवीन्द्रनाथ, वन हंड्रेड पोएम्स ऑफ कबीर, पैन मैकमिलन इंडिया, 2019।
- टैगोर, रवीन्द्रनाथ, नेशनलिज़्म, द बुक क्लब ऑफ कैलिफ़ोर्निया, सैन फ़्रांसिस्को, 1917।
- फ़्रीडलैंडर, पीटर, टैगोर, कबीर एंड अंडरहिल, इंडिया सेमिनार, 2011।
- सेन, क्षितिमोहन, इंडियन मिस्टिसिज़्म, शांतिनिकेतन प्रकाशन।
- अंडरहिल, एवलिन, "भूमिका," वन हंड्रेड पोएम्स ऑफ कबीर. रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा अनूदित।